स्काउटिंग सुनागरिक बनाने का सशक्त माध्यम

'स्काउटिंग' शब्द लड़कों व लड़कियों के लिए खेलों के द्वारा सुनागरिकता में प्रशिक्षण की एक प्रणाली के अर्थ में माना जाता है। लड़कियां महत्वपूर्ण कड़ी है क्योंकि जब एक राष्ट्र की माताएं अच्छी नागरिक और जिम्मेदार महिला होगी, तो वह इस बात का सदैव ध्यान रखेगी कि उसके बच्चे भी इन गुणों से हीन न हों। वास्तविकता यह है कि स्त्री और पुरुष दोनों के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता है और यह ब्वाय स्काउट्स और गर्ल गाइड्स आन्दोलन के द्वारा दिया जाता है। दोनों के लिए सिद्धान्त एक है।

ब्वाय स्काउट आन्दोलन वर्ल्ड अर्गनाइजेशन ऑफ द स्काउट मूवमेंट (WOSM) द्वारा संचालित होती है। जिसका मुख्यालय क्वालालमपुर, मलेशिया में है। विश्व में WOSM के 162 देशों में 40 करोड़ से अधिक सदस्य हैं। WOSM को 6 क्षेत्रों (Regions) में बांटा गया है। भारत स्काउट्स और गाइड्स एशिया पेसिफिक क्षेत्र के अन्तर्गत आता है, जिसका क्षेत्रीय कार्यालय मनीला, फिलीपिंस में है। गर्ल गाइडिंग आन्दोलन वर्ल्ड एसोसिएशन ऑफ गर्ल गाइड्स एण्ड गर्ल स्काउट्स (WAGGS) संस्था द्वारा संचालित होती है। इसका मुख्यालय लन्दन, इंग्लैण्ड में है। भारत स्काउट्स और गाइड्स संस्था के गाइड विंग का पंजीकरण WAGGGS के अन्तर्गत हुआ है। WAGGGS को भी 5 क्षेत्रों (Regions) में बाँटा गया है। भारत एसिया पेसिफिक क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। जिसका मुख्यालय लन्दन में है। विश्व में WAGGGS के 146 देशों में 10 करोड़ से भी अधिक सदस्य हैं।

अधिकांश देशों में स्काउट और गाइड आन्दोलन अलग-अलग संचालित किए जाते हैं। परन्तु भारत में स्काउट्स और गाइड्स आन्दोलन **"भारत स्काउट और गाइड"** संस्था के अन्तर्गत एक साथ सफलतापूर्वक संचालत किए जाते हैं। भारत स्काउट और गाइड का राष्ट्रीय मुख्यालय लक्ष्मी मजूमदार भवन, महात्मा गाँधी मार्ग, आई.पी. स्टेट, नई दिल्ली में है। जिसके मुख्य संरक्षक भारत के महामहिम श्री राष्ट्रपति जी हैं।

उ.प्र. भारत स्काउट और गाइड प्रादेशिक संस्था का मुख्यालय, गोल मार्केट महानगर, लखनऊ है। जिसके मुख्य संरक्षक उत्तर प्रदेश के महामहिम राज्यपाल महोदय हैं। भारत स्काउट और गाइड को छः क्षेत्रों (Region) में बांटा गया है। उत्तर प्रदेश उत्तरी क्षेत्र (North Region) के अन्तर्गत आता है। प्रादेशिक संस्था के अन्तर्गत प्रदेश में संचालित डिविजन/जिला संस्थाएं आन्दोलन का संचालन करती है। जिला संस्था के अन्तर्गत लोकल संस्था/ग्रुप संस्था संचालित है। स्काउट विंग का ग्रुप कब पैक, स्काउट दल और रोवर क्रू से मिल कर बनता है। जबकि गाइड विंग का ग्रुप बुलबुल फ्लाक, गाइड कम्पनी और रेंजर टीम से मिल कर बनता है। उ.प्र. भारत स्काउट और गाइड गोरखपुर संस्था का मुख्यालय अयोध्या दास स्काउट कुटीर, सिविल लाइन्स, गोरखपुर में है। इसके पदेन अध्यक्ष माननीय जिलाधिकारी महोदय हैं।

इसी प्रकार विश्वविद्यालय स्तर पर भी प्रत्येक राज्य के प्रत्येक विश्वविद्यालय का एक रोवर स्काउट एवं रेंजर गाइड

आन्दोलन का एक संगठन है। जो शिक्षा निदेशक, उच्च शिक्षा, डिग्री विकास अनुभाग के दिशा निर्देशन में संचालित होता है और प्रत्येक विश्वविद्यालय सम्बन्धित जिले के पदाधिकारियों और तकनीकी विशेषज्ञों के सुझाव, सहयोग एवं मार्गदर्शन में रोवर स्काउट एवं रेंजर गाइड गतिविधियों का सकुशल संचालन करती है।

स्काउटिंग एवं गाइडिंग के अन्तर्गत विभिन्न क्रिया कलापों के माध्यम से युवा वर्ग का शारीरिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक विकास करने का प्रयास कर आदर्श नागरिकता के गुणों का निरुपण करने का प्रयत्न किया जाता है।

युवा वर्ग को प्रशिक्षण देने हेतु उनके आयु वर्ग को ध्यान में रखते 5 श्रेणियों में बांटा गया है। पहले श्रेणी के अन्तर्गत 3 से 5 वर्ष आयु के बच्चे-बच्चियां आते हैं। उन्हें वनी कहा जाता है। इनका सिद्धान्त वाक्य 'मुस्कराओ' है। दूसरे श्रेणी में 6 से 10 वर्ष आयु के विद्यार्थी होते है।, उन्हें स्काउटिंग में लड़कों को कब और लड़कियों को बुलबुल कहा जाता है। इनका सिद्धान्त वाक्य 'कोशिश करो' है। तीसरे श्रेणी में 10 से 17 वर्ष आयु के विद्यार्थी आते हैं। उन्हें स्काउटिंग में लड़कों को स्काउट और लड़कियों को गाइड कहा जाता है। इनका सिद्धान्त वाक्य 'तैयार रहो' है। चौथे श्रेणी में 15 से 25 वर्ष आयु के विद्यार्थी होते हैं। इन्हें स्काउटिंग में लड़कों को रोवर और लड़कियों को रेंजर कहा जाता है। इनका सिद्धान्त वाक्य 'सेवा करो' है। पाँचवें श्रेणी में 25 से ऊपर 35 वर्ष आयु के युवा आते हैं। इन्हें सेवारत रोवर स्काउट और सेवारत रेंजर गाइड कहा जाता है। स्काउटिंग में आयु वर्ग को ध्यान में रखकर उनके लिए अलग-अलग कार्यक्रम एवं अलग-अलग प्रशिक्षण की पद्धतियां अपनायी जाती है, जो आयु वर्ग विशेष के लिए चित्ताकर्षक है। स्काउटिंग के जनक लार्ड राबर्ट स्टीफेन्सन स्मिथ वेडेन पावेल ने रोवरिंग/रेंजरिंग की स्थापना 1918 में युनाइटेड किंगड्म में की।

स्काउटिंग उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अर्थात् क्रियाशील नागरिकता के प्रशिक्षण के लिए चार शाखाओं पर बल दिया जाता है, पहला - स्वास्थ्य और शक्ति, दूसरा चरित्र और बुद्धिमता, तीसरा हस्त कला और कौशल, चौथा पर सेवा और नारिकता है। चारो शाखाएं युवा वर्ग के सर्वांगीण विकास के लिए अति आवश्यक है।

कोलम्बिया विश्वविद्यालय, न्यूयार्क के टीचर्स ट्रेनिंग कालेज के डीन 'जेम्स ई. रसल' ने स्काउटिंग के विषय में लिखा है कि 'ब्वाय स्काउट का कार्यक्रम मनुष्य बनाने का कार्य है। यह लड़के के लिए आकर्षक है, इस लिए नहीं कि वह एक लड़का है, बल्कि इसलिए कि वह निर्मित होता हुआ एक मनुष्य है। स्काउट कार्यक्रम लड़के से ऐसा कुछ भी अपेक्षा नहीं करता है, जो कि मनुष्य न करता हो। यह बालक को जहां है, वहां से उस स्थान तक ले जाता है, जहां उसे होना चाहिए।' बालक/बालिकाओं को स्काउट कार्यक्रम से अधिक उसे सम्पन्न कराने का तरीका पसन्द आता है, जो उनमें अगुआपन, आत्म निर्देशन, संयम व आत्म विश्वास के अवसर उपलब्ध कराता है।

जिला मण्डल, प्रदेश व राष्ट्रीय स्तर पर स्काउट/गाइड एवं रोवर/रेंजर में आत्म विश्वास, नेतृत्व की क्षमता का विकास, मित्रता एवं भाई-चारे की भावना के विकास हेतु समय-समय पर रैलियां व समागम का आयोजन किया जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आपसी सम्बन्धों को मजबूत करने, एक दूसरे के कौशलों को सीखने एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान हेतु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जम्बूरी का आयोजन भी किया जाता है।

अजय कुमार सिंह
जिला प्रशिक्षण आयुक्त (स्काउट)
गोरखपुर